कंचना कुमारी
अतिथि [illegible], हिन्दी
यू. आर. कॉलेज रोसड़ा

कुकुरमुत्ता — 1 सूर्यकांत त्रिपाठी संकलित (राग-विराग)

(1) ~~एक~~ एक थे नव्वाब
फारस से मँगाये थे गुलाब।
बड़ी बाड़ी में लगाये
देशी पौधे भी उगाये
रखे माली कई नोकर
गज़नी का बाग मनहर
लग रहा था।
एक सपना जग रहा था
साँस पर तहजीब की,
गोद पर तरतीब की।
क्यारियाँ सुन्दर बनी।
चमन में फैली घनी।
फूलों के पौधे वहाँ
लग रहे थे खुशनुमा।
बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी
जुही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी
चम्पा, गुल मेंहदी गुलखेरू गुल अब्बास,
गेंदा, गुल दाऊदी, निवाड़ी, गंधराज

संदर्भ — छायावादी काव्यधारा के कवि महाकवि निराला द्वारा रचित 'कुकुरमुत्ता' नामक कविता से है। यह भाव, भाषा एवं कथ्य की दृष्टि से पूर्व लिखित छायावादी कविताओं से पूर्णतः भिन्न है। 'कुकुरमुत्ता' साहित्य के क्षेत्र में कवि की एक क्रांतिकारी रचना थी।

प्रसंग — प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने कविता को प्रारंभ करते हुए नवाब के एक उद्यान

का वर्णन किया है —

व्याख्या — पुष्पों के शौकीन एक नवाब थे। जिन्होंने अपने उपवन में रोपित करने के लिए उपवन की सौन्दर्यता बढ़ाने के लिए गुलाब फारस से मंगवाये थे। उन्होंने गुलाब को बड़े उद्यान में लगाया एवं गुलाब के साथ उपवन में देशी प्रजाति के अर्थात भारतीय पौधों को भी उगाया। उन्होंने उपवन की देखरेख हेतु कई माली एवं नौकर रखे। यह बाग ऐसा मनोहर लग रहा था जैसे गजनवी का हो नावब साहब के उद्यान की शोभा को देखकर, नवाब साहब का कोई स्वप्न-सा जाग्रत हो रहा था। उनकी श्वांसों में सभ्यता एवं उनकी व्यवस्था रूपी गोद में करीने की सजावट थी। उद्यान में सुन्दर-सुन्दर क्यारियाँ बनी। वे क्यारियाँ चमन में सघन रूप से फैलाई गई। बाग में फूलों के पौधे प्रफुल्लित प्रतीत हो रहे थे। इन पुष्पों में बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी, जुही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी, निवाड़ी, गंधराज तो थे ही, इनसे इतर और भी अनेक प्रजातियों के पुष्प उपवन में पुष्पित हो रहे थे। उपवन में अनेक रंगों के फव्वारों द्वारा शोभा बढ़ रही थी। जिनमें लाल, धानी, चम्पई, आसमानी, हरा, फीरोजी, श्वेत, पीला, बादामी, बसंती आदि। विभिन्न प्रकार के रंगों की छटा बिखर रही थी। इन फव्वारों और फूलों से इतर, उपवन में अनेक

(3)

तरह के वृक्षों का भी वर्णन किया है जिन
आम, लीची, संतरे और फालसे के पेड़
प्रमुख थे।
इस उद्यान में कलियाँ पुष्प का रूप से पं
चटकने की मधुर आवाज करती है। नव
स्फटिक कली से मृदुल-गंध आ रही
इस गंध को अपने साथ लेकर हवा
मंथर गति से मदमस्त होकर बह रही थ
वृक्षों की शाखाओं पर बुलबुलों की चहच
थी। वही वृक्षों की टहनियाँ झुकने लग
जाती थी। उद्यान चिड़ियों का आश्रय ब
गया था। इस उद्यान में मानव भ्रमण हे
आवागमन-पथ का निर्माण भी किय
गया था। यह उद्यान बेहद विशाल एवं
विस्तृत था दूर-दूर तक फैला हुआ था
इसके बीच एक विश्राम स्थली भी था
जो नवाब साहब के बड़प्पन को प्रदर्शित
कर रहा था। उपवन में कहीं झरने तो
कहीं लघु पर्वताकार कहीं साफ-स्वच्छ
चमन था तो कहीं नकली झारी थी।